आम आदमी के खास गीतकार–अदम गोंडवी

डॉ0 एम0 हसीन खान

असि0 प्रोफेसर हिन्दी
कार्यक्रम समन्वयक रा0 से0 योजना पूर्वा0वि0वि0 जौनपुर
मो0 नं0 9415867809

कैफ़ भोपाली ने अदम गोंडवी के सरल व्यक्तित्व का चित्रण कुछ इस प्रकार से किया है ''मैने अदम को पहली बार जनवादी लेखक संघ के कानपुर वाले राज्य सम्मेलन में सुना था। वहाँ श्रोताओं से कई गुना ज्यादा कवियों की भीड़ थी। मंच पर सैकड़ों कवि अपनी कविता के साथ उपस्थिति थे। उन्हीं के बीच घुटनों तक मटमैली धोती, सिकुड़ा मटमैला कुरता और गले में सफेद गमछा डाले ठेठ देहाती आदमी भी था, जिसकी ओर हमारा ध्यान इसलिये नहीं जा पा रहा था कि कवियों के अनियन्त्रित भीड़ में फँसा हुआ सा लगता था, पर आतंकित और घबराया हुआ बिलकुल नहीं था। भीतर–ही भीतर वह उनके अविश और उतावलेपन पर हँस रहा था। किन्तु ऊपर से शालीन और अनजान बना हुआ था। यह वही आदमी था जो मंच पर नाम पुकारे जाने पर अदम गोडंवी के रूप में माइक पर आ खड़ा, और अपने कलाम से, गर्बीले चेहरे को निस्तेज और हतप्रभ कर फिर उसी भीड़ में अबोध बच्चे की–सी मुद्रा के साथ वापस जा बैठा, कविता पढ़ने के बाद फिर तो वही–वही दिखा।''

रही बात मेरी तो मेरा प्रथम परिचय अदम गोंड़वी से शोध करते समय हुआ जब मै नागार्जुन से सम्बन्धित–साहित्य का अध्ययन कर रहा था उसी दौरान नागार्जुन को समर्पित अदम गोंडवी की इन कविताओं को पढ़ा और इतना प्रभावित हुआ कि कहा नहीं जा सकता–

वामपंथी सोच का आयाम है नागार्जुन / जिन्दगी में आस्था का नाम है नागार्जुन।
ग्राम–संघी सृर्जना, उसमें जुलाहे का गुहार / जितना अनपढ़ उतना ही अभिराम है नागार्जुन।।
मैं तो कहता हूँ उसे बंगाल की खाड़ी सुबह / केरला की खूबसूरत शाम है नागार्जुन।
इस अहद के साथ कि इस बार हारेगा यजीद / कर्बला के युद्ध का पैगाम है नागार्जुन।

बाबा नागार्जुन को याद करते हुये जो अदम गोडवी ने लिखा है उसे देखने और पढ़ने के बाद मैं इतना रोमांचित हो गया कि इस कविता के एक–एक शब्द मेरी आत्मा में बस गये। देखते ही देखते मैने पूरी कविता को याद कर डाली और उसी समय मेरे मन ने निश्चय किया कि इन पंक्तियों को संदर्भित किये बिना अपना शोध कार्य पूरा नहीं करूंगा। आगे यही हुआ भी इसका एक–एक शब्द मुझे नागार्जुन की एक–एक कविताओं एवम् उनके व्यक्तित्व को रूबरू कराता जान पड़ा यह सत्य है अदम और उनकी कविताओं का अकाल के कवि नागार्जुन ने जहाँ अकाल और उसके बाद नामक कालजयी कविता की रचना की तो वहीं अदम गोंडवी ने इसी कविता की तर्ज पर अकाल के कवि नागार्जुन के

Scanned with CamScanner

व्यक्तित्व को अक्षरषः रेखांकित करने वाली कविता लिखी। ऐसा वही कवि कलाकार कर सकता है जिसमें जनता जनार्दन से जुड़ने एवम् उसके दुःखों संघर्षो में साथ रहने का माद्दा हो। यह माद्दा हमें अदम गोंडवी में देखने को मिलता है। यदि नागार्जुन आजीवन विपक्ष के कवि बने रहे और नैरन्तर्य सत्तापक्ष की गलत नीतियों का विरोध करते रहे। ठीक उसी तरह अदम गोंडवी अपनी कविताएं एवम् गजले ठेठ ग्रामांचल भाषा में न सिर्फ प्रभावशाली ढंग से पढ़ते थे बल्कि उनमें व्यवस्था विरोधी भावनाओं की अभिव्यक्ति होती थी।

झूठ–मूठ के सुजलाम् सुफलाम्, गीत न अब हम गायेगें।
शाग–पात तरकारी जब तक, पेट भर हम नहीं खायेंगे।। (नागार्जुन)
जनता के पास एक ही चारा है बगावत।
यह बात कह रहा हूँ मै होशोहवास में।। (समय से मुठभेड़, पृ070)

ईश मिश्र के अनुसार,' अदम ठेठ गवई अन्दाज और तेवर के कवि थे।– दलितों के दुख दर्द के कारणों की पहचान और उनसे निजात पाने के रास्ते के अन्वेषण को समर्पित था उनका कवि कर्म। उनकी कविताएं अपनी धार और शैली के पैनेपन के चलते शहरी मध्यवर्ग में भी लोकप्रिय हुई है। अदम मानते थे कि एक सार्थक जीवन जीना अपने आप में बहुत बड़ा उद्देश्य है। और एक जनपक्षीय कवि के रूप में आखिरी साँस तक वे अपने विचारों और कवि कर्म की प्रतिबद्धता पर अडिग रहते हुए जीवन की सार्थकता साबित करते रहे।[2]

आम आदमी के प्रति सदा प्रतिबद्ध रहने वाले अदम गोडवी की गजलों का जहाँ मुख्य स्वर राजनीतिक विद्रूपता तथा व्यवस्था के प्रति आक्रोश का रहा है, वहीं सामाजिक–आर्थिक विषमता, गरीबी, बेकारी, साम्प्रदायिकता, लालफीताशाही, दलितों की कारुणिक स्थिति आदि तमाम समस्याओं पर अपने गजलों में बेलौस चित्रण किया है। उनकी गजले पाठकों को गुदगुदाती नहीं है वरन् झकझोरती हैं, परिवर्तन हेतु प्रेरित भी करती हैं। मंगलेश डबराल के शब्दों में कहा जा सकता है ''..... वास्तव में अदम की गजलों में कल्पना की ऊँची उड़ान नहीं है। नहीं अत्यत्त सुक्ष्म नाजुक ख्याली, न झटकेदार, मुहावरेवाजी, न अंदाजेबयॉ की खूबसूरती है, फिर भी ये गजले अपने समय सापेक्ष, और क्रान्तिकारी सामाजिक चेतना की बदौलत, पाठक और श्रोता की संवेदना के कोमल तंतुओं को झकझोरकर जागृत करने में कामयाब होती है।''[3]

वर्तमान राजनीति में 'वादों' और आश्वासनों का ही बोलबाला है। राजनेता केवल आश्वासन देते रहते है। उस पर वे अमल तनिक भी नहीं करते आश्वासनों से गरीब को रोटी नहीं मिल सकती आज राजनीति में ऐसे कई लोगों की आमद हो चुकी है जिनकी कोई योग्यता नहीं है गुण्डे, बदमाश झूठे तथा मक्कार लोग आज संसद में पहुँच गए हैं। उनसे हम निःस्वार्थ राजनीति की कैसे कामना कर सकते है जिस प्रकार बाबा नागार्जुन ने 'बापू के भी ताऊ निकले तीनों बन्दर बापू के' कविता लिखकर राजनीति के पाखण्ड को उजागर किया था। ठीक उसी प्रकार अदम गोंडवी ने भी वर्तमान राजनीति एवम् राजनेताओं के पाखण्ड पर सीधा प्रहार किया है–

Scanned with CamScanner

जिनके चेहरे पर लिखी है जेल की ऊँची फसील। रामनामी ओढ़कर संसद के अन्दर आ गए।।
देखना–सुनना व सच कहना जिन्हें भाता नहीं। कुर्सियों पर फिर वही बापू के बन्दर आ गए।।[4]

अदम ने अपनी गजलों में भ्रष्ट और विलासी राजनेताओं का सटीक चित्रण किया है। एक ओर देश में गरीबी और बीमारी का वातावरण है ठीक वहीं देश के अलम्बरदार अपनी विलासिता में डूबे हुए है। पाँच सितारा होटल, गेस्ट हाऊस, विधायक एवम् सांसद निवास आदि जगहों पर ये राजनेता न जाने क्या–क्या गुल खिलाते है। खादी के वस्त्र धारण कर न जाने कितने गलत राष्ट्र विरोधी कार्य में रत रहते है। इनकी इसी विलासिता पर अदम गोंडवी ने ये तीखा व्यंग्य किया है।

'काजू भुने प्लेट में व्हिस्की गिलास में। उतरा है रामराज, विधायक निवास में।।

यह वे भूल जाते है। धर्म के नाम पर वे लोगों को आपस में लड़वाते है। अतः समाज में होने वाले दंगे–फसादों से आहत होकर अदम गोंडवी कहते है।

'खुदा का वास्ता देकर किसी का घर जला देना।
ये मजहब की वफादारी हकीकत में सियासी है।।
कभी तकरीर की गर्मी से चूल्हा जल नहीं सकता।
यहाँ वादों के जंगल में सियासत बे–हया सी है।। (समय से मुठभेड़ पृष्ठ 55)

वर्तमान राजनीति की निर्लज्जता का अदम ने बेबाक चित्रण किया है। देश की राजनीति में संसद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है किन्तु आज संसद की गरिमा नष्ट हो चुकी है। धूमिल ने तो संसद को तेली की एक ऐसी घानी कहा जिसमें आधा तेल और आधा पानी है। संसद में आज गाली–गलौज, मारपीट तथा असभ्य व्यवहार आम बात हो गई है। संसद में आम–आदमी के हित का कोई ठोस निर्णय नहीं हो रहा है। समाजसेवी अन्ना हजारे उनके साथियों द्वारा जनलोकपाल एवं चुनाव में प्रत्याशी शुचिता सम्बन्धी राइट टू रिकाल को लेकर एक बड़ा जनान्दोलन भी किया गया, लगा कि कुछ बात बनेगी, लेकिन वही ढाँक के तीन पात हुआ। संसद में लगातार निरर्थक चर्चाए होती रही–

'जल रहा है देश ये बहला रही है कौम को
किस तरह अश्लील है संसद की भाषा देखिए।। (समय से मुठभेड़ पृष्ठ 36)
पक्के समाजवादी है तस्कर हो या डकैत।
इतना असर है खादी के उजले लिबास में।। (समय से मुठभेड़ पृष्ठ 70)

हमारे देश में चँहु ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है। लोकतंत्र से लोभ और मोह का निर्माण हुआ तो इस भ्रष्टाचार के दानव का भी जन्म हुआ। पैसा कमाना, जेब भर लेना, सत्ता यानी सम्पत्ति का रास्ता खुलना यहाँ जगह न मिले तो विदेशी बैकों में जमा करना, इतने लोभ का निर्माण हुआ। टेम्पटेशन' की कोई सीमा नहीं रही। दुःखद तो यह है कि चपरासी से लेकर बड़े अधिकारी तक, नेता से लेकर मंत्री तक सभी भ्रष्टाचार में संलिप्त है और अपनी शर्मोहया को बेच चुके है–

'रिश्वत को हक समझ ले रहे हो लोग।
है और कोई मुल्क तो उसकी मिसाल दो।। (समय से मुठभेड़ पृष्ठ 56)

Scanned with CamScanner

गरीबी, आर्थिक विषमता एवम् महगाई का चित्रण भी अदम गोंडवी की गजलों में परिलक्षित होता है। जनवादी कवि होने के चलते अदम गोंडवी की गजलों एवं रचनाओं में आम आदमी के अभावों का सटीक चित्रण किया है। आर्थिक अभाव के कारण वह अपनी जीवनपरक वस्तुएं भी खरीद नहीं पाता। उसकी इसी स्थिति का वर्णन करते हुए अदम ने लिखा है।

'चीनी नहीं है घर, लो मेहमान आ गए।
मंहगाई की भट्टी पे शराफत उबाल दो।। (समय से मुठभेड़ पृष्ठ 56)

अर्थिक विषमता के कारण अमीर और अमीर होते जा रहे है तथा गरीब और गरीब। अदम इस सबके लिए पूँजीवादी व्यवस्था को ही जिम्मेदार मानते है। आज देश एक विशाल शासक और शोषक वर्ग के हाथ में पड़ गया है। उत्पादकों पर अनुत्थुदक हावी है। उत्पादन मशीने कर रही है मनुष्यों के हाथ और दिमाग बेकार है। लगता है जैसे देश के ऊपर दस प्रतिशत लोगों का ही अधिकार है शेष नब्बे प्रतिशत उनकी मर्जी के गुलाम है। आम आदमी रोटी कपड़ा और मकान की समस्याओं से ग्रस्त है। दुःख अभाव, गरीबी शोषण से उसका जीवन बद से बदतर होता जा रहा है। जीवन की परेशानियों से वह पूरी तरह पस्त हो चुका है– **'आप कहते है सरापा गुलमुहर है जिन्दगी।**
हम गरीबों की नजर में इक कहर है जिन्दगी।।' (समय से मुठभेड़ पृष्ठ 84)

दुष्यन्त कुमार से आरम्भ हुई हिन्दी गजल को आगे बढ़ाने में अदम गोंडवी की भूमिका बड़ी ही महत्त्व की रही है। जिस तरीके से इन जनवादी गीतकारों, कवियों एवं गजलकारों ने व्यवस्था विरोध की जो आग जलाई थी उसे बढ़ाने का काम किया है अदम ने राजनीतिक षडयंत्र, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, संसद के वर्तमान चरित्र के साथ ही साथ उनकी गजलों में सामाजिक–आर्थिक विषमता एवं विद्रूपता का चित्रण बखूबी हुआ है। धारदार तरीके से आम आदमी की समस्याओं से रूबरू होना अदम को साहित्यिक बिरादरी में खास मुकाम दिलाता है आज जबकि दुनियाँ और दुनियाबी लोग सिर्फ अपने आप में मुब्तिला है, किसी के पास देने के लिए कुछ भी शेष नहीं है। ऐसे में अदम गोंडवी जैसे कवि गजलकार का शेष होना आदमी और आदमियत के लिए अवश्य ही विशेष है।

सन्दर्भ–

1. समय से मुठभेड़– अदम गोंडवी (भूमिका से) पृष्ठ–07
2. इस– सम्पादक– राजेन्द्र यादव फरवरी 2012 पष्ठ–13
3. हिन्दी गजल की विकास यात्रा– ज्ञानप्रकाश विवेक –पृष्ठ–172–173
4. समय से मुठभेड़– अदम गोंडवी, पृष्ठ–31

Scanned with CamScanner